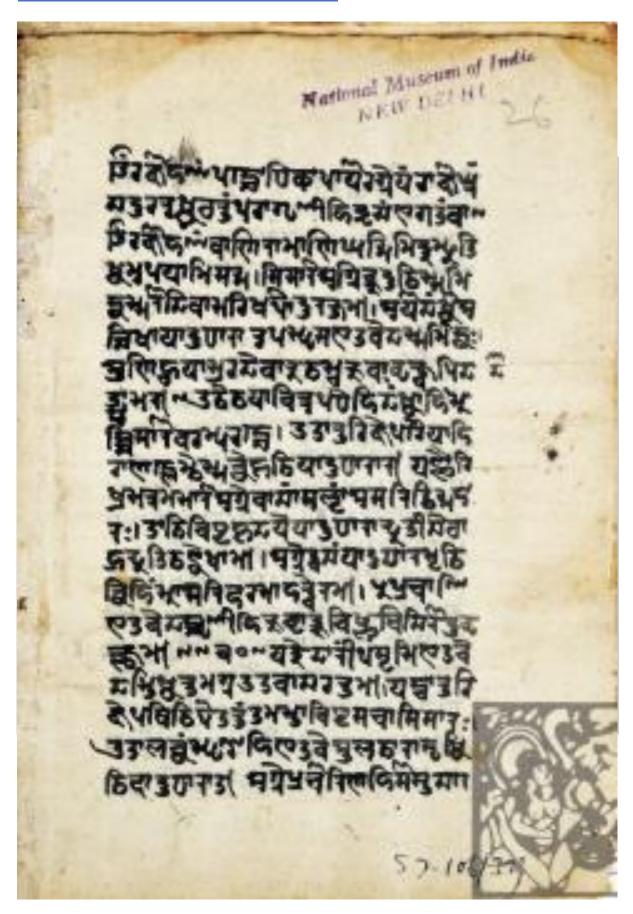


Page 1 Slokas L01.01 to L01.20



Date 18th May 2020

L01.01	मिंग्रेडिक थाइ विकथा योग्य विश्व
	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
A01.01	ॐ र क्षो ह णं पाद्चा धि का पायो रग्ने यं रा क्षो घनं
B01.01	ओम्। रक्षोहणं पाद्चाधिका पायोरग्नेयं राक्षोघ्नं
L01.02	म् उरवित्रं भरण्यानिक इसे एगाउंवा "
A01.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
	चतुर नुष्टुबन्तं परागृणी हित्र चंजागतं वा - x
B01.02	चतुरनुष्टुबन्तं परा गृणी हित्रचं जागतं वा - x
L01.03	किरवीक लवाला नाभा लिया मिभिन्न भू डि
A01.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	ॐ रक्षोहणं वाजिनामाजि घर्मि मित्त्र म्प्रति
B01.03	ओम् । रक्षोहणं वाजिनामा जिघर्मि मित्त्रम्प्रति

1. MS reads पाद्चाधिका - meaning is not clear. Needs to be cross-checked with a Purvamimamsa scholar 2. Line 2 End: with a tilde symbol, Scribe has indicated that the letter is indecipherable 1. An observation in the MS - The scribe uses Devanagari symbol for एकार & the slightly dash-like horizontal lines above शिरोरेखाs are अनुस्वार-s. Observations 2. Sometimes we find 'x' symbol which is called 'काक-पाद'. That symbol indicates replacement of wrong text with the correct text. Plus is for inserting, Cross is for replacement – They are called 'हंस अण्ड'.

Date 19th May 2020

L01.04	४ अप्याभमम्। मिमाने मि च द ३ हिन्। भि
A01.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 ष्टमुप या मि शर्म। शि शा नो अग्निर्कृतु भिस्स मि
B01.04	[मित्त्रम्प्रति]ष्टमुपयामि शर्म। शिशानो अग्निर्फ्रतुभिस्समि-
L01.05	इसनिम्वासविधपे उन्जना मय्यम्
A01.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 द्ध स्स नो दिवा स रिषो पा तु न क्त म्। अयो दं ष्ट्रो अ
B01.05	द्धस्सनो दिवा सरिषो पातु नक्तम्। अयो दंष्ट्रो अ-
L01.06	निधायाउणाग उपस्पम् उवेयस्थितः
A01.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 र्चिषा या तुधाना नु पस्पृ शजातवेदस्समिद्धः।
B01.06	र्चिषा यातुधानानुपस्पृश-जातवेदस्समिद्धः।
Notes	1. Line 4 is continuation of line 3 transliterated yesterday. The continuation from line 3 is indicated as [मित्त्रमप्रति]. 2. In line 5 the syllable प does not have 2 matras. The ओकार belongs to प (पो). प has आकार alone (पा)
	1 An observation in the MS - The scribe uses Devanagari symbol for Uphit & the

Observations

- 1. An observation in the MS The scribe uses Devanagari symbol for **एकार** & the slightly dash-like horizontal lines above **शिरोरेखाs** are अनुस्वार-s.
- 2. Sometimes we find 'x' symbol which is called '有有-पाद'. That symbol indicates replacement of wrong text with the correct text. Plus is for inserting, Cross is for replacement They are called '存书 30's'.
- 1. Sentence wise transliteration Folio I: lines 4 to 6

Others

- 2. [मित्रम्प्रति]ष्टमुपयामि शर्म। शिशानो अग्निर्फ्रतुभिस्समिद्धस्सनो दिवा सरिषो पातु नक्तम्। अयो दंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुपस्पृश-जातवेदस्समिद्धः।
- 3. Note1: Line 4 is continuation of line 3 transliterated yesterday. The continuation from line 3 is indicated as [मित्त्रम्प्रति].
- 4. In line 5 the syllable प does not have 2 matras. The ओकार belongs to प (षो). प has आकार alone (पा).

Date | 20th May 2020

L01.07	अणिक्वयभुग्येवार्ष्ठभुर्वावक्षिय द
A01.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	आ जिहव या सूर देवा न्न भ स्वक्र वा (दो)वृक्तव पिद
B01.07	आजिहवया सूरदेवान्नभस्व क्रवादोवृक्त्विपद-
L01.08	इभग ~ उठेठयावित्र थणित रक्षे हिभ
A01.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	त्थवा स न् उ भो भ या वि न्नु पधे हि दं ष्ट्रा हिंस्र
B01.08	त्श्वासन् उभोभयाविन्नुपधेहि दंष्ट्रा हिंस्र-
L01.09	भिमानवाभागान्। उउन्हारद्यान्याद
A01.09	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	शिश शानोवरम्परञ्च। उतान्तरिक्षेपरियाहि
B01.09	शिशानोऽवरम्परञ्च। उतान्तरिक्षे परियाहि

- 1. Line 7: Transliteration reads: स् (Ref.सूरदेवान्नभस्व) Correct version is म् (Word should be मूरदेवान्नभस्व)
- 2. Line 7: Transliteration reads: क्रवा*वृक्त्विप, Correction: क्रव्या*वृक्त्विप. Scribe indicates missing letter with काकपादः। This is indicated by an * in our transliteration. The missing letter suggested by the scribe at the right margin is cut during digitizing. However, we can make out that the letter cd be one among चो, ओ, ढो or दो। Of these, दो being apt, it is shown within brackets in transliteration क्रवा(दो)वृक्त्विप

- 3. Line7: Transliteration: क्रवा(दो)वृक्त्विपद-, Correct version: क्रवा(दो)वृक्त्विपध-
- 5. Line 8: Transliteration reads त्रवासन्, Correct version: त्स्वासन्
- 6. Putting together क्रवा*वृक्त्विपद in line 7 & त्श्वासन् in line 8, the correct phrase will be क्रव्यादोवृक्त्व्यिप धत्स्वासन्
- 7. Line 8: The tilde like symbol denotes double danda (II) of Devanagari. We shall revise this in our postings yesterday after verifying thoroughly.
- 8. Line 9: Transliteration reads: शिशानोवरम्परञ्च. For clarification of meaning the avagraha symbol is added before वर... & shown as शिशानोऽवरम्परञ्च in word wise & sentence wise transliteration

Date 21st May 2020

L01.10	गलाह्न हेस्थ हेहा हिया उपाना यह वि
A01.10	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	राजञ्जम्भेस्सन्धे हभिया तुधानान्। यजैरि
B01.10	राजञ्जम्भेस्सन्धेहभि यातुधानान्। यज्ञैरि-
L01.11	अभवभभाग प्रयोगामन्त्रं प्रमानि हिभ्र
A01.11	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
	षू सन्नम सानो अग्नेवा चां शल्यां अशनि र्भि मंहा
B01.11	षूसन्-नमसानो अग्ने वाचां शल्यां अशनिर्भिर्महा-
L01.12	रः। उकिविष्टक्रयेया उणगप् डीयेवा
A01.12	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	नः। ता भिविध्यहदयेयातुधानानप्रतीचोबा
B01.12	नः। ताभिविध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बा-

1. Sentence-wise transliteration - राजञ्जम्भेस्सन्धेहभि यातुधानान्। यजैरिषूसन्-नमसानो अग्ने वाचां शल्यां अशनिर्भिर्महानः। ताभिविध्य हृदये <mark>यातुधाना</mark>न्प्रतीचो बा-

2. Line 10: Ms reads: राजञ्जम्भेस्स..., Corrected version: राजञ्जम्भेस्स...

- 3. Line 10: Ms reads: सन्धेहभि, Corrected version: सन्धेहयभि
- 4. Line 11: Ms reads: नमसानो, Corrected version: नममानो
- 5. Line 11: Ms reads: वाचां, Corrected version: वाचा
- 6. Lines 11&12: Ms reads: ...र्महानः।, Corrected version: ...र्दिहानः।
- 7. Line 12: Ms reads: ताभि विध्य, Corrected version: ताभिर्विध्य

Date | 22nd May 2020

L01.13	जर्विहर्भाभा। प्रयुक्ष्ययाः अग्रेष्टि
A01.13	1 2 3 4 5 6 7 1 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	हून्प्रति भ इधे षा म्। अग्नेत्व चंया तुधान स्य भि
B01.13	हूनप्रति भङ्धेषाम् । अग्ने त्वचं यातुधानस्य भि-
L01.14	बिहिंभ्रमिविद्यभादद्वेन्भ। प्रथ्वाल्
A01.14	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 1 13 14 15 16
	निध हिंस्रा श नि हंर साहन्त्वेन म्। प्रपूर्वाणि
B01.14	न्धि हिंस्राsशनिर्हरसा हन्त्वेनम्। प्र पूर्वाणि
L01.15	एउवेम्ब्रामीक र ए इ विश्व विभिने उद
A01.15	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
H.	जात वेद १शृणी हिक्र व्यात्क्र विष्णु विचिनो तुवृ
B01.15	जातवेदश्शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्विचिनोतु वृ-
L01.16	क्ला ननवण्यर मंत्रीयष्ट्रीम्लउव
A01.16	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	क्ण म् ~ ~ व ठ/व~यत्रे दा नीं पश्य सि जात वे
B01.16	क्णम् । ~ ~व ठ/ व १ ~ यत्रेदानीं पश्यसि जातवे-

- 1. Sentence-wise transliteration Folio I: lines 13 to 16: हून्प्रति भङ्धेषाम् । अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम्। प्र पूर्वाणि जातवेदश्शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्विचिनोतु वृक्णम् । ~~व ठ/ व १ ~ यत्रेदानीं पश्यसि जातवे
- **Notes**
- 2. 01.13 Scribal error: अङ्धेषाम्, Correct version: अङ्ध्येषाम्
- 3. 01.14 Scribal error: प्र पूर्वाणि, Correct version: प्र पर्वाणि
- 4. 01.16 Ms reads: क्णम् । (~) (~) व o (~), Correct version: Here (i) the first tilde before व may denote विरामः (full-stop) (ii) वo seems to denote the mantra no. व 1 (iii) If वo is mantra no. व1, the tilde on either side of वo may denote the brackets enclosing the mantra no. व1. If so, (वo) must be transliterated as (व1). This can be confirmed only after reading the further folios

Date 22nd May 2020 (continued...)

Notes (continued...)

- 5. 01.16 Scribal error: यत्रेदानी with an anuswara to the left of नी। Correct reading: The anusvara is not exactly on दा or to the right of नी। Therefore a reader may tend to read the word as यत्रेदांनी। Considering that (i) the anusvara is on the syllable of नी, (ii) an anuswara followed by नी (दां +नी) would become न् (दान्नी) & (iii) the correct version of the word is यत्रेदानीं, we take the placement of anuswara to the left of नी as scribal error. So, we read & transliterate the word as यत्रेदानीं।
- 6. Sentence-wise transliteration: Transliterator's Error: पश्यसिजातवेद- has been posted as a single word. Correct version: पश्यसि जातवे(द). (Two words. There must be a space between पश्यसि & जातवे(द)-



Date 23rd May 2020

L01.17	मेथिष्ठ उभग उउवाम गडभाग छ।
A01.17	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	द स्तिष्ठ न्तम ग्नउतवाचर न्तम्। यद्वान्तरि
B01.17	(जातवे)दस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम्। यद्वान्तरि-
L01.18	हे। पिष्ठिपे उर्दे उभक्ष विष्टमचामिमा दः
A01.18	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
1	क्षे पथि भिपोतन्तंतमस्ताविध्यशर्वाशिशानः।
B01.18	क्षे पथिभि पोतन्तं (पथिभिर्पतन्तं) तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः।
L01.19	अगलहंभ्या किएउवे चलक् गन्धि
A01.19	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	उताल ब्धंस्पृणुहि जात वे आल भानाह ष्टि
B01.19	उतालब्धं स्पृणुहि जातवे(द) आलभानादृष्टि-
L01.20	हिदाउगाग्य मये अचितिल किमेमुमार
A01.20	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	भिर्यातुधानात्। अग्नेपूर्वीनिजहिशोशुचा *
B01.20	भिर्यातुधानात्। अग्ने पूर्वी नि जिह शोशुचा(न)॥

- 1. Sentence-wise transliteration Folio I: lines 17 to 20 (जातवे)दस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम्। यद्वान्तिरक्षे पथिभि पोतन्तं (पथिभिर्पतन्तं) तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः। उतालब्धं स्पृणुहि जातवे(द) आलभानादृष्टिभिर्यातुधानात्। अग्ने पूर्वो निजहि शोशुचा(न)॥
- 2. Line 01.17- The first word in its whole would be जातवेदस्। But line 17 begins with द। The continuation of the word drawn from line 16 is shown within brackets as (जातवे)

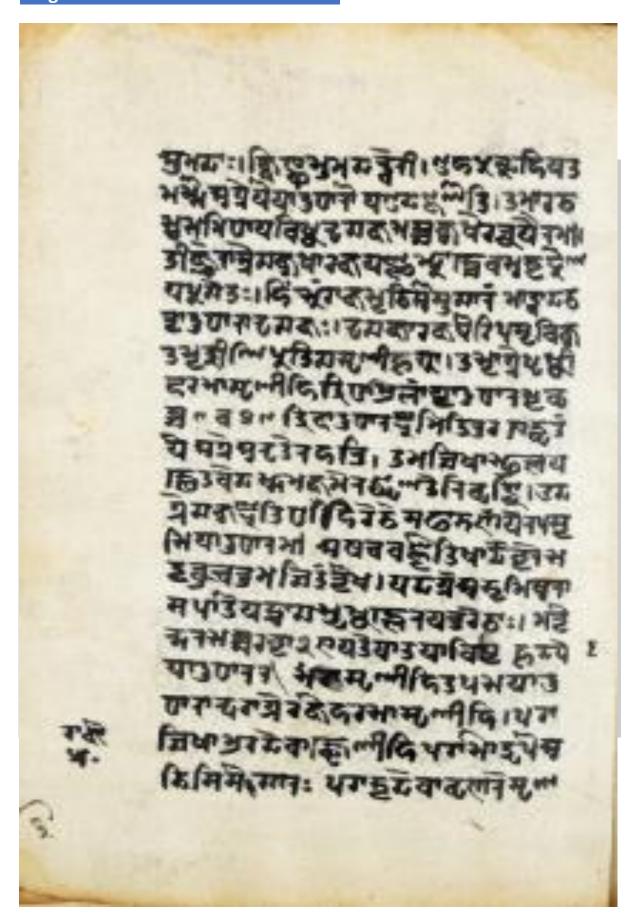
Date 23rd May 2020 (continued...)

Notes

- 3. Line 01.17 Ms reads ...तिष्ठन्तमग्न उत =तिष्ठन्तम् अग्न उत। अग्न उत in its original form is अग्ने उत। In the normal course, ए at the end of first word with उ at the beginning of the following word would combine as a सिन्धः resulting in an यान्तवान्तादेश as follows:अग्न्+ए + उ+त -> अग्न्+ अय्+उत-> अग्नयुत vide the sutra 'एचोऽयवायावः' 6.1.78. But, vide the sutra 'लोपः शाकल्यस्य' 8.3.19, the य् of अय् gets dropped optionally & we get the form अग्न उत।
- 4. Line 0.18 Scribal Error: Ms reads पथिभि पोतन्तं The correct form as shown within brackets would have been पथिभिर्पतन्तं। Instead of adding a रेफ symbol (a short stroke upward & a horizontal line leftward) above the Sarada प, the scribe has inadvertently added the wave-like ओकार symbol. Correction: Upon correction, the word would read: पथिभिर्पतन्तं। Here again, a version of the text gives the reading as two separate words: पथिभिः पतन्तं।
- 5. Line 01.19 Scribal Error: जातवे। The word is जातवेद। द is missing at the end of the word. Correction: The missing letter has been shown within brackets.
- 6. Line 01.19 Scribal Error: आलभानाद्दि (भि:). Correct version: The commentator Sayanacarya mentions the text as आलेभमानात् and its meaning as आलभमानात्। Sayanacarya's version should be taken as correct reading.

Date 24th May 2020 - Holiday

Page 2 Slokas L02.01 to L02.20



Date 25th May 2020

L02.01	जुम्मः। शिष्टुभुम् रहेनी। एक रहादियः
A02.01	1 2 3 । 4 5 6 7 8 9 10 । 11 12 13 14 15 16 17 आ मदाः । क्षिव ङ्कास्तमदन्त्वेनी । इहप्रब्रूहियत-
B02.01	आमदाः (आमादः)। क्षिवङ्कास्तमदन्त्वेनी (क्षिवनीः)। इह प्र ब्रूहि यत
L02.02	भन्भेष्ययेयाउणने यहरहान्ति। उभावक
A02.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 20 मस्सो अग्नेयोया तुधानो यइदङ्कृणो ति। तमार भ-
B02.02	[यत]मस्सो अग्ने यो यातुधानो य इद*णोति(इदङ्कृणोति)। तमा रभ-
L02.03	सुम्भिणयविश्व स्यद्भा स्वा वे ब हुये नुमा
A02.03	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 20 स्वसमिधायविष्ठनृचक्ष सश्चक्षु षेरन्धयैनम्।
B02.03	[रभ]स्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम्।
L02.04	अङ्गम्मम्बाधान्यायहरूप्राह्मबस्ट्रेल
A02.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 तीक्ष्णे ना श्ने चक्षुषा रक्षय जम्प्राञ्च वसु भ्यप्रोण-
B02.04	तीक्ष्णेनाश्ने(तीग्ने) चक्षुषा रक्ष यज्ञम्प्राञ्च वसुभ्य(वभ्यः) प्रो(प्र) ण-

- 1. Sentence-wise transliteration Folio II: lines 1 to 4 Entire Conjunct letter is illegible आमदाः(आमादः)। क्षिवङ्कास्तमदन्त्वेनी (क्षिव...नीः) । इह प्र ब्रूहि यतमस्सो अग्ने यो यातुधानो य इद*णोति (इदङ्कृणोति)। तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम्। तीक्ष्णेनाश्ने (ती...ग्ने) चक्षुषा रक्ष यज्ञम्प्राञ्च वसुभ्य (व...भ्यः) प्रो (प्र) ण-
- 2. 02.01 म (मा) दाः (दः)। नी (नीः)।
- 3. 02.02 *(§奪)
- 4. 02.04 श्ने (ग्ने) भ्य (भ्यः) प्रो (प्र)
- 5. Line 02.02 Letter indicated with * is illegible. Suggested letter for correct reading is ङ्कृ (to mean इदङ्कृणोति)
- 6. Line 02.04 Last word दभ- is incomplete, to be continued in line 02.05

Date 26th May 2020

L02.05	पर्मेडः। दि स्राज्य स्रिमेसुमानं भारत्र
A02.05	1 2 3 4 1 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
	य प्रचेतः। हिं स्रंराक्षस्य भिशोशुचानं मात्वाद भ-
B02.05	(ण)य प्रचेतः। हिंस्रं राक्षस्यिभ (रक्षास्यिभ) शोशुचानं मा त्वा दभ-
L02.06	राउणगरम्बः। रमकारक्षिप्रविक
A02.06	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
1	न्यातुधानानृचक्षः । नृचक्षारक्षपोरिपश्यविक्षु
B02.06	(दभ)न्यातुधाना नृचक्षः। नृचक्षा रक्ष पोरि(परि) पश्य विक्षु
L02.06	उध्याल्य प्रायम्मीहरू ११ । उर्थे ग्रेथ क्ष
A02.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 112 13 14 15 16
五五	त स्यत्री णि प्रति च शृणी हय ग्रा।त स्या ग्ने पृष्टी
B02.07	तस्य त्रीणि प्रति च ** शृणीहयग्रा। तस्याग्ने पृष्टी-
L02.07	दरभामानीकारिणभूनाशारणमध्य
A02.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	हं∗र सा शृणी हि त्रिधाम् लांय्यातुधानस्य वृ-
B02.08	(पृष्टी)र्हरसा शृणीहि त्रिधा(त्रेधा) मूलांय्यातुधानस्य(मूलंय्यातुधानस्य) वृ-

- 2. Versions 2 & 3 Word-wise & Sentence-wise transliterations: Line 02.05: (i) ण shown in brackets is drawn from previous line for completion of the word ण্य
- 3. Scribal error: राक्षास्यिभे Suggested Correction: रक्षास्यिभ
- 4. Line 02.06: (i) বৃभ shown in brackets is drawn from previous line for completion of the word বুমন্
- 5. Scribal error: पोरि Suggested correction: परि

Date 26th May 2020 (continued...)

- 6. Line 02.07: ** is seen in the MS. It is not seen in the original text.
- 7. Line 02.08: पृष्टी shown in brackets is drawn from previous line for completion of the word पृष्टीहरसा
- 8. MS reads: त्रिधा Textual reading: त्रेधा। Meaning wise, both are correct. Metrical correctness must be confirmed from subject-scholars.
- 9. Scribal error: मूलांय्यातुधानस्य Suggested correction: मूलंय्यातुधानस्य
- 10. The doubling (द्वित्वम्) of यकार after the anusvara in **लां (लं)** in **लांय्या (लंय्या)** is optional by the Sutra 'अन्स्वारस्य यथि परसवर्णः' 8.4.58



Date 27th May 2020

L02.09	हें जिल हर अण्य मुभितित्व एक व
A02.09	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
	श्च ॥ व ॥ ~ त्रियां तुधान *प्रमितिन्तर ए त्वृतं
B02.09	(वृ)श्च॥ व २ ॥ त्रिर्यातुधानप्रमितिन्तर(त्रिर्यातुधानप्रसितिन्त) एत्वृतं
L02.10	च प्रमुर ३ नक्ति। उभिर्म भक्तय
A02.10	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1 10 11 12 13 14 15 16
	ये अग्ने अनृते न ह न्ति। तम चिषा स्फूर्जय
B02.10	(ये(यो) अग्ने अनृतेन हन्ति(1)। तमर्चिषा स्फूर्जय-
L02.11	किउवेर से भहाभन्य नाउनिक द्वि। उर
A02.11	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
A02.11	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 1 16 17 ञ्जात वेदस्स मक्षमेन **घृणते निवृ ङ्धि।तद
A02.11 B02.11	
H	ञ्जात वे द स्स मक्ष मे न **घृण ते नि वृ ङ्धि। त द (स्पूर्जय)ञ्जातवेदस्समक्षमेन*घृणते(समक्षमेन*गृणते) नि वृङ्धि। तद-
B02.11	ञ्जात वे द स्स मक्ष मे न **घृण ते नि वृ ङ्धि। त द (स्पूर्जय)ञ्जातवेदस्समक्षमेन*घृणते(समक्षमेन*गृणते) नि वृङ्धि। तद-
B02.11 L02.12	ञ्जात वे द स्स मक्ष मे न **घृण ते नि वृ ङ्धि। त द (स्पूर्जय)ञ्जातवेदस्समक्षमेन*घृणते(समक्षमेन*गृणते) नि वृङ्धि। तद-
B02.11 L02.12	ञ्जात वे द स्स मक्ष मे न **घृण ते नि वृ ङ्धि। त द (स्पूर्जय)ञ्जातवेदस्समक्षमेन*घृणते(समक्षमेन*गृणते) नि वृङ्धि। तद-

- 1. Sentence- wise transliteration— Folio II: lines 9 to 12: (वृ)श्य॥ व २ ॥ त्रिर्यातुधानप्रमितिन्तर(त्रिर्यातुधानप्रसितिन्त) एत्वृतं ये(यो) अग्ने अनृतेन हन्ति (1)। तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदस्समक्षमेन*घृणते(...समक्षमेनगृणते) नि वृङ्धि। तदग्ने चक्षुप्रति धाहि(धेहि) रेभे शफारुजं येन पश्य-
- 2. Words shown within brackets are suggested correct readings as in text.
- 3. Line 10 The lower syllable $\overline{\mathbf{d}}$ in the word is not legible. It has been read so in accordance with the textual reading $\overline{\mathbf{e}}$

Date 27th May 2020 (continued...)

- * **क**, ख group of letters known as <u>velars</u>. प, फ group of letters are known as <u>bilabials</u>. When **velars** follow a **visarga** (:), they may be pronounced as <u>voiceless velar</u> <u>fricatives</u> (जिह्वामूलीय)। When **bilabials** follow a **visarga**, they may be pronounced as <u>voiceless bilabial fricatives</u>. The **velar fricative** symbol (: क/ख) is shown as a **x**. The **bilabial fricative symbol** (: प/फ) is shown as a pair of small crescents representing the 2 lips facing apart from each other. This <u>upadhmaaniya</u> symbol is shown in lines 9 & 12 to indicate the **visarga** preceding **प्**।
- 5. * There are at the least 4 types of Vedic pronunciation of anusvara. What is indicated by * in line 02.11 is one such type. Considering that the letter seems to be a conjunct with घ्र (ग्र) as the lower syllable, the anusvara here seems nearer in pronunciation to इ। This has to be confirmed by a Vedic scholar.



Date 28th May 2020

L02.13	भियाउणन्या स्वववहात था है हो भ
A02.13	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	सिया तुधानम् अथर्वव **यति षादैव्यने स
B02.13	(पश्य)सि यातुधानम्। अथर्व व**यतिषा(वञ्ज्योतिषा) दैव्यने(दैव्येन) स-
L02.14	हें बेच अभिने वे के के किया
A02.14	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	त्य नधू वं न्त मर्चि तं त्यो ष। य द ग्ने अ द्य मि थु ना
B02.14	(स)त्यन्धूर्वन्तमर्चितं(चितं) त्योष। यदग्ने अद्य मिथुना
L02.15	म पाँउयञ्च मध्याह्न त्यञ्च हः। अह
A02.15	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 I 15 16
	श पा तो य द्-र्व च स्तृष्ट ञ्ज न य न्तरे भाः । म न्यो
B02.15	शपातो यद्-र्वचस्तृष्टञ्जनयन्त(यद्वाच) रेभाः। मन्यो-
L02.16	मनभन्न रहा ३ एवडे या उया विष्ट क्ष स्व
A02.16	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18
	र्मन स श्चरव्या 3 जाय तेयातया विध्य हृदये
B02.16	(मन्यो)र्मनसश्चरव्या3 जायते या तया विध्य हृदये

- 1. Sentence-wise transliteration Folio II: lines 13 to 16: (पश्य)सि यातुधानम्। अथर्व व**यतिषा(वञ्ज्योतिषा) दैव्यने(दैव्येन) सत्यन्धूर्वन्तमर्चितं (...चितं) त्योष। यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्-र्वचस्तृष्टञ्जनयन्त (यद्वाच...) रेभाः। मन्योर्मनसश्चरव्याः जायते या तथा विध्य हृदये
- 2. Line 02.13: Ms reads अथर्व**ज्यतिषा। Textual reading of the word is अथर्वं ज्योतिषा।
 The scribe has probably combined the अनुस्वारः & ज् to form the conjunct letter
 ज्ज्। But both syllables look different from what we have learnt. From an angle, it
 also looks as if the conjunct in the MS is ज् on top & ञ् at bottom. But the formation
 is not ज् (ज्on top+ञ्at bottom). Also, the ओकार symbol of य above the शिरोरेखा is
 unlike what we see in the rest of the MS or what we have learnt.

Date 28th May 2020 (continued)...

- 3. Line 02.16: The no. **3** after **व्या** indicates that the **आकार**: is a **प्लुत** to be sounded for a period of **3 maatraas**.
- 4. Line 02.16: There is an overwriting of ध्य in the word विध्य। The scribe has indicated the correct letter as ध्य in the right margin.

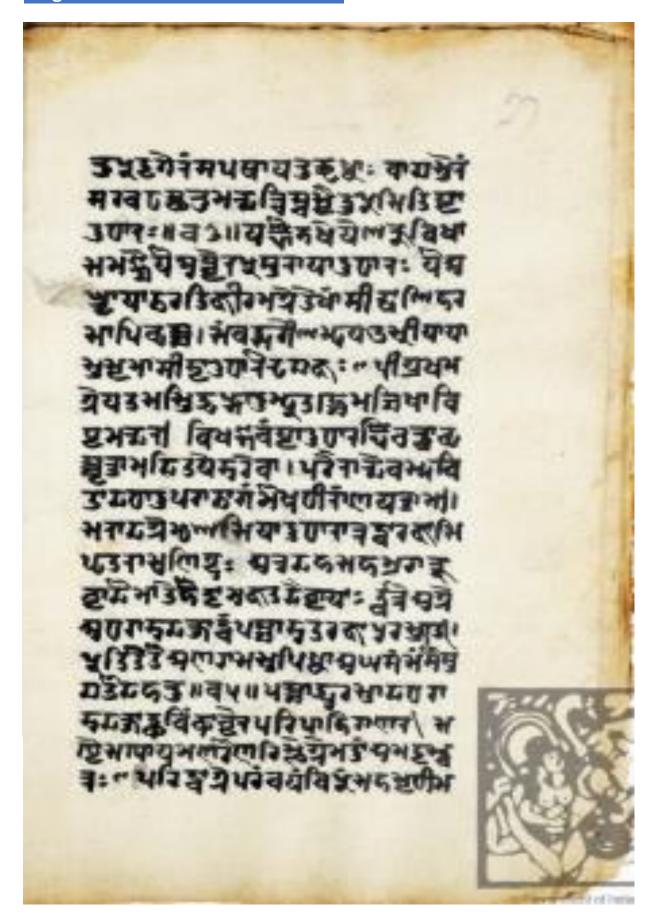


Date 29th May 2020

L02.17	याउणन्त्र भवामा मिहिउधभयाउ
A02.17	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
	यातुधानन सराशृणी हित पसया तु
B02.17	यातुधानन(यातुधानान्) सरा(परा) शृणीहि तपस(तपसा) यातु-
L02.18	णगचगञ्चे वेद्वीद्यसम्बन्धित्या
A02.18	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 1 14 15
	धानान्पराग्नेरक्षोहरसा शृणी हि। परा
B02.18	(यातु)धानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि। परा-
L02.19	विधा अरहे का कि लिक्षिय में भारती म
A02.19	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
THE R	र्चिषा मूर देवा ञ्छ्रणी हि परासो तृपो अ
B02.19	(परा)र्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासोतृपो(परासुतृपो) अ-
L02.20	किमिम्सानः थग्डक्व कलन्यल
A02.20	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
	भिशिशो शानः पराद्यदेवा वृजनेशृण
B02.20	(अ)भि शिशोशानः (।) पराद्य देवा वृजने(वृजिनं) शृण-

- 1. Sentence-wise transliteration Folio II: lines 17 to 20 यातुधानन(यातुधानान)। सरा(परा) शृणीहि तपस(तपसा) यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि। परार्चिषा मूरदेवाञ्छणीहि परासोतृपो(परासूतृपो) अभि शिशोशानः। पराद्य देवा वृजने(वृजिनं) शृण-
- Notes
- 2. Bottom of page: Marking on Left margin: Top: रक्षोध्न. Bottom: ऑ
- 3. Corrections of scribal errors are shown in brackets
- 4. Line 02.17: <mark>यात्धानन (।) (यात्धानान्।) The danda is not written clearly.</mark>
- 5. Markings at bottom of page: रक्षोघ्न. indicates title of the work, namely रक्षोघ्नमन्त्रः
- 6. 31 indicates salutation & end of page

Page 3 Slokas L03.01 to L03.20



Date 30th May 2020

L03.01	उद्रश्नेमथयायउर्धः वाग्रभेनं
A03.01	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	न्त प्रत्यगेनं शपथा यन्तुतृष्टाः वाचस्तेनं
B03.01	(शृण)न्त(शृणन्तु) प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः(।) वाचस्तेनं(वाचास्तेनं)
L03.02	मग्व ए छन्न भन्न विष्ठ छे अर्थ । अर्थ ।
A03.02	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	श रव ऋ च्छ न्तु मन्द न्वि श्व स्यै तुप्र सि ति ग्या
B03.02	शरव ऋच्छन्तु मन्दन्विश्वस्यैतु(मर्मन्विश्वस्यैतु) प्रसितिग्या(प्रसितिं या)-
L03.03	उणरः॥व ३॥यक्षेत्रधयेण इविधा
A03.03	1 2 3 II 4 5 II 6 7 8 9 10 11 12 13 14
	तुधानः ॥ व 3 ॥ य* पौरुषे येण क्रविषा
B03.03	(या)तुधानः॥ व ३ ॥य* पौरुषेयेण क्रविषा
L03.04	समद्भिष्यमृहत्रम्मगयाः यम
A03.04	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	स म ङ्क्तेयो अ श्व्ये न प्र शुना या तुधा नः यो अ-
B03.04	समङ्क्ते यो अश्व्येन प्रशुना(पशुना) यातुधानः(।) यो अ-

- 1. Sentence-wise transliteration Folio III Lines 1 to 4: (शृण)न्त(शृणन्तु) प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः (I) वाचस्तेनं(वाचास्तेनं) शरव ऋच्छन्तु मन्दिन्वश्वस्यैतु(मर्मिन्वश्वस्यैतु) प्रसितिग्या (प्रसितिं या) तुधानः॥ व 3 ॥य* पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन प्रशुना(पशुना) यातुधानः (I) यो अ-
- 2. Suggested correct readings of scribal erroneous words are shown within brackets.

Date 30th May 2020 (continued...)

Notes

- 3. Line 03.02: Scribal Error: प्रसिति*या The top syllable in the conjunct letter with या at the bottom poses a problem here. या is to continue into the next line as यात्धानः। This & context suggest that the syllable after प्रसिति is an अन्स्वारः। Text also reads प्रसितिं यातुधानः So there are 2 possibilities - (i) the अनुस्वारः above या may have optionally become य्। But the doubling of य् can be done only by the changing of तिं to तिं - प्रसितिं यात्धानः। Again, this changing of normal anusvara to Vedic anusvara can happen only within the same word. (ii) Second possibility is that प्रसितिं is at the end of a sentence & all anusvaras at the end of a sentence must be written as म्। If so, the scribe cannot combine म् & या as प्रसितिम्यात्धानः as one word. Combining both as one word poses one more problem - By the Sutra 'मोऽनुस्वारः' - 8.3.23, म् at the end of a word when followed by a word beginning with a consonant must become an anusvara. So, the form should be प्रसितिं यात्धानः। Also, if the upper syllable was म्, the **शारदा मकारः** does not have शिरोरेखा, whereas we see a शिरोरेखा here. So, the nearest in the form seen in the manuscript is ग्+या। Hence, the transliteration is taken as प्रसितिग्यात्धानः while the correct reading should be प्रसितिं यात्धानः।
- 4. Line 03.03: (i) **य* पौरुषेयेण** The asterisk is a विसर्गः pronounced a<mark>s an उपध्</mark>मानीयम्।
 This is shown by the scribe with anउपध्मानीय symbol. Please refer Notes on Lines 9
 & 12 of May 27, 2020 on उपध्मानीयम्।
- 5. (ii) पौरुषेयेण Scribal error in writing पौ। The scribe has written पा (with दीर्घ symbol) as the bottom syllable and shown ओकार symbol at the शिररोरेखा। Technically आ+ओ->औ। But औ is shown as one integrated symbol at the top of the singular consonant or a conjunct consonant, whereas here it is split as आकार symbol at प and ओकार symbol on top

राडेकिन । शारदा सिख

Date 31st May 2020

L03.05	श्रुपाठगडिकीग्भेचे उर्था मी सालदर
A03.05	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	घ्न्याया भरति क्षीर मग्ने तेषां शीर्षाणि हर-
B03.05	(अ)घ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हर-
L03.06	भाषिवा हो। संवस्ती न्या उनीय य
A03.06	1 2 3 4 1 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
	सापिवृश्च। संवत्सरीण म्पयउसी याया
B03.06	(हर)सापि वृश्च। संवत्सरीणम्पय उस्रीयाया(उस्रियाया)-
L03.07	अस्भामी हुउण निरमदाः ल पी यथभ
A03.07	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
THE R	स्त स्य मा शी द्या तुधा नो नृ च क्षः । पी यूष म
B03.07	(उस्रीयाया)स्तस्य(उस्रियायास्तस्य) माशीद्यातुधानो नृचक्षः। पीयूषम-
L03.08	व्रयउभिक्ष अप्यु अञ्चल वि
A03.08	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
	ग्नेय तस स्तितृप्सातम्प्रतञ्चमर्चिषावि
B03.08	(पीयूषम)ग्ने यतसस्ति(यतमस्ति-) तृप्सातम्प्रतञ्चमर्चिषा(-तृप्सातं प्रत्यञ्चमर्चिषा) वि-

- 1. Sentence-wise transliteration Folio III 5 to 8: (अ)घ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च। संवत्सरीणम्पय उस्रीयायास्तस्य(उस्रियायास्तस्य) माशीद्यातुधानो नृचक्षः। पीयूषमग्ने यतसस्तितृप्सातं (यतमस्तितृप्सातं) प्रतञ्चमर्चिषा(प्रत्यञ्चमर्चिषा) वि-
- 2. Line 03.05: घ्न्याया is the continuation of word अघ्न्याया beginning with अ at end of Line 03.04. Continuation of a word from a previous line or in the next line is shown with hyphen mark.

Date 31st May 2020 (continued...)

Notes

3. Line 03.08: Ms reading: यतसस्तितृप्सात्तमप्रत्यञ्चमर्चिषा - Suggested correct reading: यतसस्तितृप्सातं प्रत्यञ्चमर्चिषा - As seen with प्रसितिम्या... in Line 03.02 (May 30, 2020), we see a scribal error of using म् instead of अनुस्वारः at the end of a word which is not the final word in a sentence. अनुस्वारः cannot be retained as such on the final syllable of the final word in a sentence. It is changed to म्। On the contrary, the final syllable म् in a word is changed to अनुस्वारः when the following word begins with a consonant. For more, please refer to Notes on 03.02 of May 30, 2020.



Date 1st June 2020

L03.09	प्रभग्ना विधर्मवेष्टाः एपितञ्च
A03.09	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 ध्यमन्दन् विषङ्गवंय्यातुधान *पिबन्त्वावृ
B03.09	(वि)ध्य मन्दन्(मर्मन्) (।) विषङ्गवंय्यातुधान(विषङ्गवां यातुधान) पिबन्त्वा वृ-
L03.10	श्रु अधि उर्य मेरे वा । परे ना से वस्पवि
A03.10	1 2 3 4 5 6 7 8 9 1 10 11 12 13 14 15 16 श्च्यन्ताम दितये दुरेवा । परैनान्देवस्स वि
B03.10	(वृ)श्च्यन्तामदितये दुरेवा (दुरेवाः)। परैनान्देवस्सवि-
L03.11	उम्ण उपम्यं भिष्णीरं एय उभा
A03.11	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 ता द धा तु प राभा गंमो षधीनां ज यन्ताम्।
B03.11	(परैनान्देवस्सवि)ता दधातु(ददातु) परा भागंमोषधीनां(भागमोषधीनां) जयन्ताम्।
L03.12	भराग्रेशिक स्वार्गियार प्राप्त विकास
A03.12	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 सनादग्ने मृण सिया तुधानान्नत्वारक्षासि
B03.12	सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न(यातुधानान् न) त्वा रक्षासि

- Sentence-wise transliteration Folio III 9 to 12: (वि)ध्य मन्दन्(मर्मन्) (1)
 विषङ्गवंय्यातुधान (विषङ्गवां यातुधान) पिबन्त्वा वृश्च्यन्तामदितये दुरेवा(दुरेवाः)।
 परैनान्देवस्सविता दधातु(ददातु) परा भागंमोषधीनां(भागमोषधीनां) जयन्ताम्। सनादग्ने
 मृणसि यातुधानान्न (यातुधानान् न) त्वा रक्षासि
- 2. Line 03.09: Ms reads विषङ्गवंय्यातुधान... (Suggested correct reading: विषङ्गवं यातुधान...) Optional is Doubling of य् as shown in the MS. There again the correct form would be विषङ्गवाँय्यातुधान... This is possible through the application of the Sutra 'वा पदान्तस्य' 8.4.59. By this sutra, when य् follows an anusvara at the end of a word (in this case गवां), a letter homogeneous with य् (i.e. य्) is substituted optionally. But the anusvara will become the nasal य्, i.e. यँ। So we have 2 options: (i) ...गवां यातुधान... or (ii) ...गवाय्याँतुधान... The MS shows the anusvara on व followed by doubling of य्। To avoid ambiguity, the reading of ...गवां यातुधान... as in the text has been suggested as correction.

Group 5 Sarada Manuscripts

Date 1st June 2020 (continued...)

Notes

3. Line 03.09: **यातुधान* पिबन्त्वा** - the asterisk, for want of appropriate key, indicates उपध्मानीयम्। Please refer to Notes on Lines 9 & 12 (May 27, 2020) on उपध्मानीयम्।



Date 2nd June 2020

L03.13	ध्यम्भित्यः यत्रम्भवभगद्
A03.13	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15
	पृतनासु जिग्युः अनुदहसह मूरान्क्र
B03.13	पृतनासु जिग्युः अनु दह सहमूरान्क्र-
L03.14	रुप्रभाउष्ट अबाउ प्ररायः द्वि प्रयो
A03.14	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	व्या दो मा ते हो त्या मुक्ष त दै व्या याः त्व न्नो अग्ने
B03.14	(क्र)व्यादो मा ते होत्या(हेत्या) मुक्षत दैव्यायाः(।) त्वन्नो अग्ने
L03.15	भगगम्म अर्थभागः ।
A03.15	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
4	अधरा दुदक्तात्वं पश्चा दुतर क्षापुर स्कतात्।
B03.15	अधरादुदक्तात्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्कतात्(पुरस्तात्)।
L03.16	भू उडिउ मण्यमभ्रिपक्षाम्यभू भूमें
A03.16	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	प्रतितेतो अजरासस्तिपिष्ठा अघशंसंशोशु
B03.16	प्रति ते तो(ते) अजरासस्तिपिष्ठा अघशंसं शोशु-

- 1. Sentence- wise transliteration Folio III Lines 13-16: पृतनासु जिग्युः अनु दह सहमूरान्क्रव्यादो मा ते होत्या(हेत्या) मुक्षत दैव्यायाः (I) त्वन्नो अग्ने अधरादुदक्तात्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्कतात्(पुरस्तात्)। प्रति ते तो(ते) अजरासस्तिपष्ठा अघशंसं शोशु-
- 2. Suggested corrections are shown within brackets.

Date 3rd June 2020

L03.17	गडरवड ॥व्यापञ्चापुग्याग
A03.17	1 2 3 4 5 II 6 7 II 8 9 10 11 12 13 14 15
	चतोद हन्तु॥ व ४॥ पश्चात्पुरस्तादधारा
B03.17	शोशु-)चतो दहन्तु ॥ व ४॥ पश्चात्पुरस्तादधरा-
L03.18	मम्बद्धिक हेर परिपादिगणन । भ
A03.18	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
	दुदक्तात्क विंका व्येन परिपाहि राजन्स
B03.18	(पश्चात्पुरस्तादधरा-)दुदक्तात्कविं(कविः) काव्येन परि पाहि राजन् (।) स-
L03.19	ष्टिभाषायुभणाँ गाविक्षेत्रेयभङ्ग
A03.19	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	ख्ये सखा य मजरोज रिम्णे ग्नेमर्ता अमर्त्यस्व
B03.19	(स-)ख्ये(सखे) सखायमजरो जरिम्णेग्ने(जरिम्णेडग्ने) मर्तां(मर्तां) अमर्त्यस् <mark>?व-(अम</mark> र्त्यस्त्व-)
L03.20	वः ए पविष्यं ये पवे व वे विश्व भद्र भ्रति भ
A03.20	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17
	न्नः ॥ परित्वाग्ने परंवयं विप्रंस हस्यधीम
B03.20	(अमर्त्यस्त्व)न्नः॥ परि त्वाग्ने परं(पुरं) वयं विप्रं सहस्य धीम-(हि।)

- 1. Sentence-wise transliteration: Folio III Lines 17-20 (शोशु-)चतो दहन्तु ॥ व ४॥ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्किवं (...किवः) काव्येन परि पाहि राजन् (।) सख्ये(सखे) सखायमजरो जरिम्णेग्ने(जरिम्णेंडग्ने) मर्ता(मर्तां) अमर्त्यस्?व (अमर्त्यस्त्व-)न्नः॥ परि त्वाग्ने परं(पुरं) वयं विप्रं सहस्य धीम-(हि।)
- 2. Suggested corrections for scribal errors are shown within brackets.
- 3. Line 03.17: The letters चतो at the beginning of the line are continuation of the final letters शोश्र in Line 03.16
- 4. Line 03.19: अमर्त्यस्?व- (Correct reading: अमर्त्यस्त्व-) The त् in सत्व is not legible. The illegible syllable is indicated as ? in the transliteration.

Date	3 rd June 2020 (continued)	
	5 Julie 2020 (continued)	

- 5. The final word धीम in Line 03.20 is incomplete. The completion of the word धीमहि is indicated by (हि)।
- 6. The Rakshoghnamantra aka Rakshamantra from the Rigveda consists of 25 verses in 5 vargas. Our MS stops one syllable (i.e. **ह**) short of the first half of verse 22 in the midst of varga 5.
- 7. We began transliterating Rakshamantra MS on April 18, 2020 & completed the Sarada to Devanagari today. We can now make a few revisions after these 2&1/2 weeks:
 - a. What we transliterated is originally in verse (sloka) format. But the MS we used is written in a prose format. So, the correct way is to say that there are 20 LINES per page and not 20 slokas per page. (The whole mantra consists of 25 verses. And we have transliterated only till part of line 1 of 22nd verse).
 - b. The punctuation, basically the single danda to mark the end of a half-verse, is missing in most places. In the suggested correct version, these missing dandas were shown within brackets.
 - c. At the beginning, we were not sure what the tilde sign at the end of Folio 1 Line 2 meant. As we proceeded, we realised that the tilde sign indicates a double danda. (The scribe has marked single dandas, but not regularly.)
 - d. The actual Rakshamantra begins with Line 01.03 of the manuscript.
 - e. Every Vedic mantra shows three indicators: name of the RSI who gave it out first, the deity to whom the mantra is addressed & the metre in which the mantra is constructed. The first two lines in our MS, not seen in the original text, show the three indicators of the mantra: the RSI who gave out this mantra is Payuh (Payuh Bharadvaajah). The deity (devataa) addressed in the mantra is Agnih. There are 2 types of metres (chandas) employed in this mantra trishtubh consisting of 11 syllables per quarter or foot (paada) of each verse (verses 1-22) रक्षोहणं वाजिनामा (Folio 1 Line 3) & anushtubh consisting of 8 syllables per quarter (verses 23-25 These verses are missing in our MS.).
 - f. The purpose of reciting this mantra is to destroy evil forces denoted by the demons known as Yaatudhaanas.
 - g. The suggested correct readings have been provided within brackets at each instance. However, for greater clarity, I shall try to post the entire 25 verses in metrical form in a day or two.
 - h. A point that got missed out regarding the first 2 lines in Folio 1. Is the word पाद्चाधिका or is it पाञ्चाधिका? Considering the scribe's handwriting of ञ् in Lines 02.04 (यजम्प्राञ्च) & 03.08, (प्रतञ्चमर्चिषा), we may say that the syllable in 01.01 is ञ् & that the word in 01.01 is पाञ्चाधिका। But, looking at the syllable by itself, it looks like पाद्चाधिका।